गणपति बप्पा मोरया

कोई कहता कष्ट निवारक, कोई कहता विघ्न विनाशक।
कोई कहता सिद्धि विनायक, कोई कहता सर्वफलदायक।।

इतनी विशेषताएं लिए हुए सर्व के विघ्नहर्ता गणेश जी हैं जिनकी पूजा सबसे पहले की जाती है। गणों में श्रेष्ठ गणपति की लाखों करोड़ों नर-नारी सभी देवताओं में प्रथम स्तुत्य मानते हुए अर्चना करते हैं। ऐसी मान्यता है कि गणनायक गणेश की पूजा करने से सभी देवतायें वैसे ही प्रसन्न हो जाते हैं। स्वास्तिक को गणपति का प्रतीक माना जाता है, इसीलिए व्यापारी लोग अपने बही-खातों के प्रारम्भ में अथवा अपने व्यापार की गद्दी के निकट स्थल पर स्वास्तिक का चिन्ह अंकित करते हैं।

आपने देखा होगा कि लोग उन सभी देवताओं की पूजा अवश्य करते हैं लेकिन एक देवता ऐसा है जो सबसे भिन्न है, अलग है और महत्वपूर्ण भी है। कल्पना करने की बात है कि कोई ऐसा शरीर जिस पर सिर हाथी का हो, फिर भी वो इतना पूजा जाता हो, तो इसका कोई आध्यात्मिक कारण होना चाहिए। इसे समझने के लिए थोड़ा गणपति रहस्य में हम चलते हैं...

भारतीय साधना एवं उपासना प्रणाली में परमपिता परमात्मा के जो विभिन्न गुण हैं उनको भारतीय मूर्तिकारों तथा चित्रकारों ने विभिन्न प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त किया है। उदाहरणार्थ सरस्वती का वाहन हंस रूप में चित्रित अथवा मूर्ति का रूप प्रदान किया है जो परमात्मा से प्राप्त सद्विवेक का सूचक है। उसी प्रकार से एक मनुष्य धड़ पर हाथी का सिर होना भी कुछ रहस्यों को उजागर अवश्य करता होगा।

हाथी पशु-पक्षियों में सबसे बुद्धिमान माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि हाथी की स्मृति बहुत तीव्र होती है, वो अपने माहौल को भलि-भांति जानता है व परख सकता है। इसका अर्थ है जिस मनुष्य को आत्मा व परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो और जिसे सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में विशाल बुद्धि कहा जाता है। आम व्यवहार में भी जब किसी व्यक्ति को बहुत सी बातें याद रहती हैं और वो विशाल बुद्धि के जैसे बात करता हैं तो सहज ही लोगों के दिल से यह शब्द निकलते हैं कि कमाल है! इसका तो हाथी जैसा दिमाग है। जब हाथी गली-मोहल्लों से गुज़रता है तो बंदर उसे घूरते हैं, कुत्ते भौंकते हैं, लेकिन फिर भी वो अपनी मस्त चाल से चलता रहता है। वो ओछी बातों से उत्तेजित नहीं होता। ठीक उसी प्रकार से आत्मविश्वास पूर्वक मार्ग पर अग्रसर होना ज्ञानवान और योगयुक्त व्यक्ति के लक्षण होते हैं।

यदि हम हाथी के सूंढ़ के बारे में बात करें तो कहते हैं कि वो इतनी मजबूत व शक्तिशाली होते हैं कि वृक्ष को भी उखाड़कर सूंढ़ में लपेटकर ऊपर उठा लेता है, अर्थात् वो बुलडोज़र और क्रेन दोनों का कार्य एक साथ कर सकता है। सूंढ़ से किसी चीज़ को उखाड़कर ऊपर उठा दे या छोटे-छोटे बच्चों को भी प्रणाम करे, ये उसकी विशेषता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति भी अपनी स्थूल आदतों को जड़ों से उखाड़कर फेंकने में समर्थ है तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को धारण करने के लिए, दूसरों को सम्मान-स्नेह तथा आदर देने में कुशल होता है। ठीक इसी प्रकार हाथी के कान को हम देखें तो उसका कान बहुत बड़ा पंखे के समान होता है। जब हम किसी आवश्यक व महत्वपूर्ण बात सुनाते हैं तो हम कहते हैं कि कान खोलकर सुनो। अतः बड़े-बड़े कान ज्ञान श्रवण के प्रतीक हैं। वे ध्यान से जिज्ञासापूर्वक ग्रहण करने की भावना से पूरा चित्त देकर सुनने के प्रतीक हैं। इस विधि से सुनने के बिना मनुष्य विशाल बुद्धि हो ही नहीं सकता। वहीं यदि उसकी आँखों को देखें तो कहते हैं कि हाथी के नेत्रों को छोटी चीज़ भी बड़ी दिखाई देती है। जिस प्रकार उल्लू की आँखों की विशेषता है कि वह रात में स्पष्ट देख सकता है, जबकि सूर्य की रोशनी पड़ने के पश्चात् उसकी आँखें चौंधिया जाती है। बिल्ली की आँखें भी रात्रि के अंधेरे में देखने में सक्षम हैं। इसी तरह हाथी के समान ज्ञानवान व्यक्ति का अपना एक विशेष गुण है। वह छोटो में भी बड़ाई देखता है। हरेक की महानता उसके सामने ऊभर आती है, इसलिए वह हरेक को आदर देता है। गणेश जी को एक दंत वाला दिखाया जाता है। अगर आप ध्यान से देखें तो हाथी के बाहर निकले हुए दो दाँत तो सभी देख लेते हैं, लेकिन उसके खाने के दाँत अलग होते हैं। इसका उदाहरण है, इस संसार में दूसरे लोगों के द्वारा थोड़ा भी विघ्न न पड़े, उसके लिए ख्याल में रखकर चलना पड़ता है ताकि वे ऐसा ही न समझ लें कि हम उनके विघ्न डालने पर कोई कदम ही नहीं उठायेंगे। अपने बचाव के लिए दो दाँत ना सही, एक दाँत तो हमारे पास भी है। तो लोगों के ये मालूम रहने से कोई उल्टा कदम उठाने से टल जाते हैं। एक दाँत किसी को हानी पहुंचाने के लिए नहीं है बल्कि एक नीति है। तो नीति निपुणता भी एक कुशल व्यक्तित्व का मूल्यवान गुण है। उनके एक हाथ में कुल्हाड़ी दिखाई जाती है जो काटने का एक साधन है, अब बताओ उनको कुल्हाड़ी की क्या आवश्यकता है। इसका भावार्थ है कि ज्ञान-वान व्यक्ति में मोह-ममता के बंधन काटने व पुराने संस्कारों का मूलोच्छेदन करने की क्षमता होती है। अगर किसी व्यक्ति के अंदर मोह-ममता का वास है और जिसके पुराने संस्कार न बदले हों, वह ज्ञानी कैसा! गीता में भी ज्ञान को तेज़ तलवार की उपमा दी गई है, जिससे कि काम रूपी शत्रु को मारने की क्षमता होती है। आपने देखा होगा कि गणपति का एक हाथ सदा वरद मुद्रा में दिखाया जाता है। क्योंकि जो ज्ञानवान व्यक्ति जो पिछली बातें बताई गईं उनको धारण कर लेता है वो दूसरों को भी निर्भयता और शांति का वरदान देने का सामर्थ्य वाला हो जाता है। उसकी स्थिति ऐसी महान हो जाती है कि वो अपनी शुभ मंसा से दूसरों को आशीष प्रदान कर सकता है।

उपरोक्त सभी बातें दरअसल हम मनुष्य आत्माओं के एक-एक अंग और उससे संबंधित गुणों को दर्शा रहा है। जब हम भी गुणवान होंगे, तो हम स्वयं ही दयावान भी होंगे, विघ्न हर्ता भी होंगे और वरदाता भी होंगे। हमें इन सारे गुणों को अपने अंदर लाना है जो गणपति के अंदर दिखाया गया है। तभी विघ्नहर्ता गणेश जी की पूजा सफल मानी जाएगी।

स्वास्तिक और... - पेज 2 का शेष

अथवा धार्मिक आयोजन के प्रारंभ में गणपति का पूजन करने लगे, वैसे ही वे ये रेखाकार चित्र अपने बही के शुरु में, भूमि-पूजन के समय, गृह-प्रवेश के समय तथा हर मांगलिक पर्व के समय रखने लगे, इसके साथ-साथ वह कलश और नारियल का भी प्रयोग करने लगे क्योंकि परमपिता ज्योतिस्वरूप परमात्मा की आकृति नारियल जैसी है और उस ज्ञान सागर पिता ने सागर को गागर में बन्द करने की उक्ति के अनुसार नर-नारियों को ज्ञान कलश दिया और स्वास्तिक रूपी चक्र की तरह सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया। इन सब रहस्यों को समझते हुए अब हमें यह चाहिए कि स्वास्तिक द्वारा सृष्टि चक्र का ज्ञान स्पष्ट होता है और गणपति अथवा प्रजापिता ब्रह्मा जिस कारण से ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए, उस ज्ञान को हम सुनें और धारण करें।

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि अब परमपिता परमात्मा शिव ने फिर से वह ज्ञान-कलश प्रदान किया है और फिर से उस लुप्त-प्रायः ज्ञान का रहस्य सुनाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, हरेक इच्छुक नर-नारी को अपनी यह निःशुल्क सेवा प्रदान करता है कि वह इसके किसी भी सेवाकेन्द्र पर प्रातः या सायं पधार कर ज्ञान रूपी अमृत का पान करें तथा जीवन में आनदं रूपी मार्ग का बोध करें।

काठमाण्डु। नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राम बरण यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

कोलकाता। प.बंगाल के गवर्नर केशरी नाथ त्रिपाठी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मुन्नी। साथ हैं ब्र.कु. पुण्यवती।

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के गवर्नर राम नाईक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा। साथ हैं ब्र.कु. मंजू व ब्र.कु. दिव्या।

शिलाँग। मेघालय के गवर्नर वी. शनमुगानाथन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

चंडीगढ़। हरियाणा व पंजाब के गवर्नर कप्तान सिंह सोलंकी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उत्तरा।

दुमका। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर झारखण्ड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू को आत्म स्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु. जयमाला।